

जाऊं बलहारे

(१३०)

रूप मनोहर शोभा सागर शीश पै सिहरा धारे

हो मै जाऊं बलहारे।

प्राण प्यारे नंद दुलारे मानो रस श्रंगारे—हो मै....॥

ब्याह वाधाई नंद सदन में सुख वरिणियो नंहि जाय

गिरि पूजन आज सफलियो सजनी कहती यशुमति माय

रत्न चौकी पर बैठा दुलहा कोटि काम छबि वारे।१॥

आनंद सागर उमंगियो आंगन ले ले ललित लहरिया

नर नारी सब जै जै बोलें धन्य धन्य यह बरिया

गोकुल राणो देव मनावत वारहिं वार जुहारे।२॥

मचल मचल कर मोहनु प्यारो सुन बाबा नंद राय

मेरे संग सखा सबन को भूषण वसन सजाय

सुख मानियो बृज ईश मन ही मन आशीश वचन उचारे।३॥

नंद गाम की पुण्यभूमि में भये उदय सुधाकर श्याम

रूप सुधा बरसे अंग अंग ते शोभा अति अभिराम

बुआ प्रेम मगन हो तेहि छिन आरती आइ उतारे।४॥

करत विछावर तात मात आइ मिल भूषण वसन अपार

नभ धरणी में नौबत बाजे सब जग मंगलाचार

मैगसि मैया देत वधाई चिर जीवो सुकुमारे॥५॥